ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

गद्दर पार्टी के शहीद

सिक्ख इतिहास, भाग–दूसरा

दूसरा अंश – 10

लेखक : स. जसबीर सिंघ

प्रकाशक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक : स. जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Download Free

विषय – सूचि

1. शहीद भाई मेवा सिंह जी
2. करतार सिंघ सराभा
3. भाई जगत सिंघ
4. शहीद डा. मथुरा सिंघ
5. सरदार जवंत सिंघ जी
6. गुरुद्वारा रकाब गंज की दीवार को गिराना
7. संत रणधीर सिंघ जी

੧ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

शहीद भाई मेवा सिंह जी

सरदार मेवा सिंघ जी ने भारत को स्वतन्त्रता दिलवाने का संग्राम विदेशों में रहते हुए वहीं लड़ा और वहीं शत्रु और गद्दारों को उनकी की गई करतूतों को ध्यान में रखते हुए यमपुरी पहुंचा दिया।

भाई मेवा सिंह जी के पास खेती योग्य भूमि कम थी अत: आप रोजगार की तलाश में कैनेडा चले गये उन्ही दिनों वहां पर भारतीयों के प्रवेश पर कोई प्रतिबन्ध न था। जैसे ही वहां भारतीयों की संख्या में वृद्धी हुई तभी कैनेडा सरकार ने भारतीयें के प्रवेश में कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये और भारतीयों के साथ गुलामों जैसे व्यवहार होने लगा। सरदार मेवा सिंह जी ने इस बात को बहुत महिसुस किया। तभी वह गद्दर पार्टी के सम्पर्क में आये और उन्होंने अपने देश वासियों को जागृत करने का अभियान चला दिया उनके सामने ही कामागाटामारू जहाज के यात्रियों के साथ दुर-व्यवहार हुआ और इनकी हत्याओं की सूचना उनको मिली। मेवा सिंह जी अब प्रतिशोध की भावना में रहने लगे। वह चाहते थे कि किसी प्रकार इस करूर व ज़ालिम सरकार का अंत हो।

उन दिनों कैनेडा सरकार ने भारतीयों का दमन करने के लिए भारत के लाहौर नगर में प्रशिक्षित एक अंग्रेज़ पुलिस अधिकारी को कैनेडा बुला लिया ताकि यहां पर बसे हुए सिक्ख साम्प्रदाय को कुचला जा सके। वह अंग्रेज़ एक पुलिस सिपाही भी साथ लाया जो कि सिक्ख वेष-भूषा में रहता था और जिस ने अपना नाम बेला सिंह रखा हुआ था। यह पुलिस सिपाही कैनेडा के सिक्ख समुदाय में घुलमिल गया और गद्दर पार्टी की मीटिंगों में भाग लेने लगा। जैसे ही इसे वहां से कोई गुप्त सूचना मिलती वह तुरन्त अपने अधिकारियों को दे देता इस प्रकार सब गद्दर पार्टी का कार्यक्रम धरा का धरा रह जाता फिर एक दिन ऐसा भी आया जब इस गद्दार के विषय में देश भक्तों को मालुम हो गया। परन्तु देर हो चुकी थी।

इस बेला सिंह ने अंग्रेज़ कप्तान हापकिनशन के संकेत पर देश भक्तों में फूट डलवा दी। यहां तक कि उस ने स्थानीय गुरुद्वारे के प्रधान का गुरुद्वारे के भीतर ही हत्या करवा दी। मुकदमे में स्थानीय अदालत ने इन लोगों को बरी कर दिया और कहा कि कातिल ने अपनी सुरक्षा में गोली चलाई थी।

इस सब घटनाओं को देश भक्त कैसे सहन कर सकते थे। सरदार मेवा सिंह जी अंग्रेज़ पुलिस अधिकारी को पहले से ही जानते थे जब वह पंजाब में थे। अत: उन्होंने निणर्य लिया कि इस सब गुण्डा गर्दी की जड़ यहीं कप्तान अंग्रेज़ ही है इस को इस के किये की सजा दी जानी चाहिए। अत: उन्होंने कप्तान हापकिनशन को ठिकने लगाने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली।

21 अक्तूबर 1914 ईस्वी के दिन सरदार मेवा सिंह जी ने प्रात: काल प्रभु चरणो में प्रार्थना की और अपना पिस्तोल लेकर वह स्थानीय अदालत में पहुंचे। जहां हापकिनशन एक मुकदमे की तारीख में हाज़िर होना था। भाई साहिब एक विशेष स्थान पर उस की प्रतिक्षा में बैठ गये। जैसे ही वह वहां पहुंचा। सरदार मेवा सिंह जी ने उस पर अचूक निशाना बांध कर गोली चलाई। वह सटीक थी परन्तु हापकिनशन ने भाई साहिब को पकड़ लिया और उनके साथ लिपट गया इस पर भाई जी ने उस पर दूसरी गोली दाग दी और उसे वही ढेर कर दिया।

स्थानीय पुलिस ने उन को ग्रिफतार कर लिया । इस मुकदमे में चार अन्य व्यक्तियों को भी फंसाया गया परन्तु सरदार सेवा सिंह जी ने कहा मैं ही इस पुलिस अधिकारी का हत्यारा हूँ इस कार्य में मेरा और कोई साथी न था। अत: उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया जो उन्होंने देश सेवा के बदले सहर्ष स्वीकार कर लिया।

करतार सिंघ सराभा

सरदार करतार सिंघ सराभा का जन्म सन् 1896 ईस्वी में गांव सराभा जिला लुधियाना पंजाब में सरदार मंगल सिंघ के गृह में हुआ। आप बाल्यकाल में बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी थे अत: अपने शिक्षा प्राप्ति में अपनी प्रतिभा का अद्‌भुत प्रदर्शन किया। आप के अभिवाको ने आप

को धन अर्जित करने के लिए 15 वर्ष की आयु में ही अमरीका भेज दिया सनफरांसिस्कों बंदरगाह पर जहाज से उतरते समय भारतीय लोगों के साथ अपने अभद्र व्यवहार देखा तो आप को दूसरे देशों के यात्रियों ने व्यंग करते हुए बताया कि आप लोग गुलाम देश के निवासी हैं अत: तुम लोगों के साथ ऐसा गंदा व्यवहार किया जाता है। यह बात स्वभिमानी करतार सिंघ के हृदय को भेद कर चली गई।

सरदार करतार सिंघ सराभा (1896 –14 नवम्बर 1915 ई.) विदेशों में रहने वाले सिक्खों ने एक योजना बनाई कि सन् 1915 ई. तक हम भारत को अंग्रेज़ों के चुंगल से स्वतन्त्र करवाने का प्रयास करेगें । 19 वर्षिय युवक करतार सिंघ सराभा इस योजना की एक कड़ी थे । भेद खुलने पर इस युवकों को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया।

उन्होंने उसी क्षण धन अर्जित करने का विचार त्याग कर देश को स्वतंत्र करने का प्रतिज्ञा कर ली।

वह अमरीका में अन्य भारतीयों से मिला उन्होंने पाया कि वे लोग भी उन की तरह गुलामी की ग्लानी से पीड़ित हैं वे सभी अपने देश को स्वतन्त्र देखना चाहते हैं। इस बीच उन्होंने अमरीकी शासन पद्धति का विशलेषण किया उन्होंने पाया कि यहां सभी कुछ जन साधारण की इच्छा के अनुरूप ही किया जाता है सभी लोगों को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार प्राप्त है। बस फिर क्या था। जल्दी ही उन्होंने अपने कुछ साथियों की एक सभा बुलाई जिसमें निर्णय लिया गया कि हमें सर्व प्रथम अपने देश को स्वतन्त्र करवाना चाहिए तथा हमें समस्त भारतवासियों को पराधिनता से छुट्टकारा प्राप्त करने के लिए जागृत करना चाहिए। इस कार्य के लिए पुलेकाउंटी नामक स्थान पर एक संस्था की स्थापना की गई जिस का मुख्य उद्देश्य समस्त भारतीय में स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित करना था।

आसटोरिया में 21 अप्रैल 1913 ई. के दिन सरदार केसर सिंघ की आरा मिल में एक विशाल सम्मेलन हुआ जिस का नेतृत्व लाला हरदियाल तथा अन्य सदस्यों ने किया और निर्णय लिया कि हमें जागृति लाने के लिए एक गद्दर नामक पत्रिका प्रकाशित करनी चाहिए। इस सम्मेलन में सरदार करतार सिंघ के भाषणों ने सभी श्रोताओं के हृदय में देश प्रेम की जवाला भड़का दी। वह कुछ ही दिनों में देश भक्तों में लोक प्रिय नेता बन गया गद्दर समाचार पत्र के अधिकांश लेख करतार सिंघ सराभा के ही होते। सराभा जी को ही समाचार पत्र के साईकलोस्टाईल करने का

कार्यभार सोपा गया, वही इस पत्र को सभी दूर - दराज के स्थानों को भेजते। कुछ समय पश्चात इस संस्था का नाम पैसिफिक ऐसोशोशन के नाम से न जान कर, लोग इसे 'गद्दर' संस्था के नाम से जानने लग गये।

दिसम्बर 1913 ई. में सैकरामैंट नामक स्थान पर एक विशाल भारतीयों का सम्मेलन हुआ। इस में इस संस्था का पुनरगठन हुआ। जिसमें बहुत से नये लोगों को लिया गया और नई उपाधि की घोषणा की गई इस संस्था में सब से छोटी आयु के सरदार करतार सिंघ सराभा थे जो अपनी योगिता और देश भक्ति के बल के आधार के कारण उच्च पद पर नियुक्त हुए।

उन दिनों सरदार करतार सिंघ शिक्षा प्राप्ति के साथ धन अर्जित करने के लिए एक श्रमिक के रूप में भी कार्यरत रहते थे। लाला हरिदयाल जी का गद्दर पार्टी का कार्यलय सरदार करतार सिंध सराभा के नालंदा होसटल के कमरे में ही कार्यरत था। भले ही लोक दिखावे के लिए लाल जी का कार्यलय सानफ़रांस्किों में स्थित था परन्तु वास्तव में सभी कार्य भारतीय विद्यार्थी अवकाश के समय मिलजुल कर करते थे।

करतार सिंघ सराभा ने स्थानीय एक हवाई जहाज कम्पनी में मकैनिक का काम सीखने के लिए किसी तरह प्रवेश पा लिया तभी प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया। तब गद्दर पार्टी ने विचार किया कि अब समय उचित है ब्रिटेन युद्ध में उलझा हुआ है अत: हमें भारत पहुंच कर सशस्त्र युद्ध कर के स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

करतार सिंघ जी बहुत उत्साहित युवक थे अत: वह पार्टी के आदेश से पहले ही भारत लौट पड़े तथा पकड़े जाने के भय के कारण उन्होंने भारत में प्रवेश करने का रास्ता बदल लिया अत: वह साफ बच निकले परन्तु अन्य गद्दरी लोग जगहां - जगहां पकड़ लिए गये, फिर भी कुछ गद्दरी किसी तरह वापस पंजाब पहुंचने में सफल हो गये। जो बच निकले उन्होंने गुप्त रूप में मिटींग की और अगले कार्यक्रम के अंतरगत छावनीयों में जा कर सैनिकों को एक निश्चित समय निश्चित दिन सशस्त्र बगावत करने लिए तैयार कर लिया। डाक्टर मथुरा सिंघ कोहली ने एक विशेष स्थान पर बम्ब निर्माण करने प्रारम्भ कर दिये। इन देसी बम्बों से उन्होंने सरकारी टाउट (भेदीयों) को उड़ा दिया। इस के साथ ही करतार सिंघ सराभा ने बंगाल के क्रांतिकारियों से भी

सम्पर्क किया इस प्रकार रास बिहारी तथा अन्य कांतिकारी उनके साथ पंजाब आये और उन्होंने स्थानीयें गद्दीरों का मार्ग दर्शन करते हुए उन्हें कुछ सुझाव दिये जिस के आधार पर 12 फरवरी 1915 ईस्वी को एक साथ सभी छावनीयों में विद्रोह कर दिया जाये निश्चित किया गया। इन सभी कार्यो के लिए धन की आवश्यकता थी। धन प्राप्ति का साधन के लिए पून्जीपतियों तथा अंग्रेज़ों के पिठुओं के घरों में डाके मारने का कार्यक्रम बनाया गया। बस यहीं भयंकार भूल हुई डाके मारत समय पकड़ा गया, काल सिंघ कमजोर व्यक्ति था उसने पुलिस को सब भेद बता दिया । जैसे ही यह भेद खुला सब छावनियों में देसी फौजियों से शस्त्र ले लिए गये और उन पर कड़ी निगरनी रखी गई। इस के साथ ही पुलिस ने एक किरपाल सिंघ नाम का भेदियां इन क्रातिकारियों में घुसबैठ करवा दी उस जासूस न धीर - धीरे सभी क्रांतिकारियो को पकड़वा दिया परन्तु करतार सिंघ सराभा बच कर सीमा प्रांत पिशावर नगर की और निकल गया। वहां उन को ज्ञात हुआ हम रूस अफगानिस्तान होकर नहीं जा सकते क्यों कि अफगानी सरकार ने एक विशेष संधि के अंतरगत सभी क्रांतिकारियों को वहां से पकड़कर अंग्रेज सरकार को लोटाने का कार्यक्रम बनाया हुआ है। बहुत सोच विचार के पश्चात सरदार करतार सिंघ तथा जगत सिंघ फिर वापस लोट आये और सरगोधे नगर में शस्त्र खरीदने के चक्कर में भेदीयों द्वारा ग्रिफतार करवा दिये गये।

उन दिनों अंग्रेज़ सरकार ने ओडवाइर (राज्य पाल पंजाब) के कहने पर क्रातिकारियो को कड़ी सजा देने का प्रावधान निश्चित किया । लाहौर नगर में एक विशेष ट्रब्युिनल निश्चित किया गया जिस के समक्ष 81 गद्दरियों के केस प्रस्तुत किये गये। साधारण सी न्यायिक जांच के पश्चात लगभग सभी के मृत्यु ढंड दिया गया इसमें करतार सिंघ सराभा भी था। न्यायाधीश ने करतार सिंघ को नवालिक जान के उन्हें अपने ब्यानों में संशोधन करने लिए कहा और उनके लिए निर्णय अगले दिन के लिये टाल दिया। परन्तु सरदार करतार सिंघ सराभा एक सच्चा - सुच्चा देश भक्त सिपाही था उसने वीर - योद्धाओं की तरह शहीद होना स्वीकार कर लिया जब कि उसे न्यायेधीश क्षमा करने के पक्ष में थे। सरदार करतार सिंघ अपने प्राणों की आहुति इस लिए देना चाहता था कि उन की शहीदी (बलिदान) देश के नवयुवकों के लिए प्रेरणां स्रोत बन जायेगी अत: देश आज नहीं तो कल स्वतन्त्र होकर ही रहेगा।

भाई जगत सिंह

स्वतन्त्रता संग्राम यादगारी कमेटी द्वार प्रकशित गुद्दर पार्टी के इतिहास में दर्शाया गया है कि गांव शूर सिंघ जिला लांहौर क्रांतिकारियों का मुख्य गढ़ था। दो बड़े गद्दरी नेता भाई जगत सिंह तथा भाई प्रेम सिंघ इसी गांव के थे। अन्य क्रांतिकारियों सरदार बुडढा सिंघ, स. गंडा सिंह, स. हरिनाम सिंघ, स. केसर सिंघ, स. मंगल सिंघ, स. साधू सिंघ, स. गुरदित सिंघ, स. जयवंत सिंघ, स. काला सिंघ तथा स. हिम्मत सिंघ आदि भी इसी गांव शूर सिंघ के निवासी थे। इन लोगों का प्रभाव आस – पास के समस्त क्षेत्रों में था। कक्ड़ां नामक स्थान पर एक विशेष अड्डा भी इन्होंने स्थापित किया हुआ था। तथ्य यह कि उन दिनों वह समस्त क्षेत्र क्रांतिकारियों का गढ़ माना जाता था।

भाई जगत सिंघ जी उन पंजाबीयों में से थे जो उपजीविका के लिए विदेश में जाने के लिए विवश हुए थे। जब उन्होंने विदेश में भारतीयों के साथ गुलाम देश के नागरीक होनें के कारण अभ्रद व्यवहार देखा तो उन के हृदय में देश भक्ति की ज्वाला भड़क उठी परन्तु उन्हें कोई राह नहीं सूजता था कि हम गुलामी की जंजीरे कैसे तोड़े?

जब उन्हें मालूम हुआ कि मेरी तरह अन्य प्रवासी भारतीय भी देश अज़ाद करवाने की चिन्ता में हैं तो वह तुरन्त उनके सम्पर्क में आये तब उनको भी गद्दर समाचार पत्र पढ़ने को मिलने लगा। बस फिर क्या था, पार्टी के निर्णय के अनुसार उन्होंने भी स्वदेश लौट कर सशस्त्र आंदोलन में भाग लेने का कार्यक्रम बना लिया और लौट पड़े। परन्तु अंग्रेज़ सरकार सावधान हो चुकी थी । उन्होंने प्रमुख आंदोलनकारियों को भारतीय बंदरगाहों पर ही ग्रिफतार कर लिया। भाई जगत सिंघ एक युक्ति से किसी प्रकार बच कर पंजाब पहुंच गये और उन्होंने बचे हुए आंदोलन कारियों को फिर से संगठित किया।

अक्तुबर 1914 फीरोज़पुर के एक रेलवे स्टेशन पर किसी अन्य नाम से गद्दर पार्टी की एक बिल्टी आनी थी। जब उसे प्राप्त करने क्रांतिकारी पहुंचे तो उन्होंने पाया कि वहां पुलिस का पहरा है। क्रांतिकारियों को संदेह हो गया कि स्टेशनमास्टर ने पुलिस को इस बिल्टी की सूचना दी है तब क्रांतिकारी लौट आये परन्तु उन्होंने समय मिलते ही स्टेशन मास्टर को गोली मार दी। यह कार्य भाई जगत सिंघ जी ने किया था।

जब यह निर्णय लिया गया कि फिरोज़पुर नगर की छावनी पर आक्रमण किया जाये तथा दूसरी तरफ मीयां मीर छावनी पर नियन्त्रण किया जाये तब भाई जगत सिंघ तथा साथियों को यह कार्यभार सोपा गया। तभी संदेश प्राप्त हुआ कि पुलिस को गद्दर करने की निश्चित तिथि का पता लग गया है अंग्रेज़ सरकार सावधान हो गई है। उन्होंने कई छावनियों से सैनिकों से शस्त्र जमा करवा लिये हैं। उस समय भाई जगत सिंघ जी समस्त सशस्त्र गद्दरियों को एकत्र कर के हमले की तैयारी में जुटे हुए थे।

जब गद्दर करने की 21 फरवरी सन् 1915 तिथी का भांडा फोड़ हो गया तो स्थान–स्थान पर छापे मार कर गद्दरियों को ग्रिफतार कर लिया गया परन्तु समय रहते सरदार जगत सिंघ, सरदार करतार सिंघ सराभा तथा टुंडीलाट जी, तीनों लाहौर से लायलपुर नगर निकल गये वहां उन्होंने रूस जाने का निर्णय बनाया, जब वे सीमा प्रांत पहुंचे तो उनको मालुम हुआ कि अफगानिस्तान सरकार से अंग्रेजों की नई संधि हुई है वह भारत के वहां पहुंचे हुए क्रांतिकारियों को पकड़कर अंग्रेजों के हवाले कर देती है अत: इन्होंने फिर से नये निर्णय लिए और फिर नये सिरे से क्रांति की योजना बनाने वापिस लोट पड़े।

इन्होंने अपना नया ठिकाना (केन्द्र) सरगोधा नगर को बनाया। वहां वे शस्त्र एकत्र करने में जुट गये एक दिन वह एक सिपाही से एक बन्दूक लेने गये परन्तु सिपाही ने अपने बड़े अधिकारी को विश्वास में लिया, यही फिर से भांडा फोड़ हो गया क्यों कि वह अधिकारी अंग्रेजों का पिठू निकला उस से गुप्त रूप से सूचना देकर तीनों क्रांतिकारियों को पकड़वा दिया।

26 अप्रैल 1915 को लाहौर साजिस केस का मुकादमा शुरु हुआ। इस केस में 82 गद्दरी दोषी पाये गये। संक्षिप्त से मुक्कदमें में भाई जगत सिंह को भी दोषी पाया गया उन्होंने अपने बचाव में कोई दलील नहीं दी बल्कि वहां अदालत में बहुत भावपूर्ण भाषण दिया जिस का प्रभाव स्थानीय जनता पर चिर स्थाई रहा और अंग्रेज़ भी कांप उठा। इस प्रकार भाई जगत सिंघ जी को 16 नवम्बर 1915 ई. को मृत्यु दण्ड देकर फांसी पर लटका दिया गया। वह बहुत सुन्दर और प्रभावशाली व्यक्तित्त्व के स्वामी थे।

शहीद डा. मथुरा सिंघ

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए चलाये गये सब से बड़े सशस्त्र आंदोलनों में गद्दर पार्टी की प्रमुख भूमिका थी। इस संग्राम के विफल होने पर 145 व्यक्तियों को मृत्यु दंड देकर शहीद कर दिया गया तथा 306 व्यक्तियों को उमर भर का कड़ा कारावास दिया गया और अण्डमान की सेलूर जेल (कालापानी) भेजा गया। इन में अधिकांश सिक्ख साम्प्रदाय के व्यक्ति ही थे। इन में एक बहूमुखी प्रतिभा का स्वामी सरदार डा. मथुरा सिंघ भी था जिसे फांसी पर लटका कर मृत्यु दंड दिया गया।

डा. मथुरा सिंघ जी के प्रारम्भिक जीवन के विषय में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। वैसे आप ढुडीयाल ग्राम, जिला जेहलम पच्छिमी पंजाब के निवासी थे। इस क्षेत्र को पोठोहार भी कहते है। यहां के बहुत कम युवकों ने स्वतन्त्रता अंदोलनों में भाग लिया है परन्तु डा. मथुरा सिंघ जी ने वह कमी भी पूरी कर दिखाई। आप जी 19 वीं शताब्दी के अन्त में अमरीका के कैलेफोरनिया क्षेत्र में जा बसे। इस क्षेत्र में उन दिनों भी बहुत से पंजाबी भारत से वहां धन अर्जित करने के विचार से गये हुए थे। इन लोगों में ही सर्वप्रथम अपने मूल देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए जागृति उत्पन हुए क्यों कि वहां पर गुलाम देशों के नागरिकों को हीन दृष्टी से देखा जाता था और उन के संघ व्यांग किये जाते थे। सरदार मथुरा सिंघ जी वहां डाक्टरी की प्रैक्टिस कर रहे थे, वह गुलाम देश के नागरिक होने का व्यंग बाण साहिन नहीं करवाते थे। वह इस ग्लानी से सदैव चिंतित रहते थे। कि कैसे यह गुलामी की लानत गले से उतारी जाये। एक दिन उनको गद्दर अखबार पढ़ने को मिली बस फिर क्या था। वह इसी संस्था के सदस्य बन गये। आप बहुत शिक्षित व्यक्ति थे अत: आप की सूझ-बूझ ने आपको इस गद्दर संस्था के उच्च कोटी का नेता बना दिया। जैसे ही प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ गद्दर संस्था ने निर्णय लिया कि अब समय उपयुक्त है सभी गद्दर संस्था के सदस्यों को वापस स्वदेश लोट कर वहां लोगों को जागृत कर के संगठित करना चाहिए जिसे से सशस्त्र युद्ध के लिए कार्यक्रम बन सके।

सरदार मथुरा सिंघ जी ने इस कार्य को अन्य देशों में बसे भारतीयों तक पहुंचने के लिए कैलेफोरनिया से हांगकांग की यात्रा की वहां उन्होंने बहुत सफलता मिली वहां बसे भारतीय सभी देश की स्वतन्त्रत के लिए मिटने को तैयार थे । फिर वह शंघाई गये वहां भी उन का भारतीयों ने भव्य स्वागत किया उनको प्रत्येक विदेश में बसे भारतीयों का समर्थन प्राप्त होता चला गया।

भारत लोटते समय गद्दर पार्टी के प्रधान सरदार सोहण सिंघ भकना भी शंघाई पहुंचे वहां से उन्होंने 80 पिस्तोल तथा बहुत बड़ा भण्डार गोलियों का खरीदा परन्तु वह खेप भारत नहीं पहुंच सकी। क्योंकि इतफाक से रास्त में खेप को लाने वाले को विवशता में फांस जाना पड़ गया। धीर – धीरे सभी गद्दर पार्टी के सदस्य अलग – अलग जहाजों द्वारा स्वदेश लोट आये और उन्होंने पंजाब के कई नगरों में मीटिंग की उन का लक्ष्य था देहती युवकों को गद्दर पार्टी का सदस्य बनाना और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तत्पर रहने के लिए प्रेरणा।

अब समय था शस्त्र – अस्त्र इक्टठे करना का, अत: अधिक से अधिक शस्त्र खरीदे गये परन्तु जो अस्त्र प्राप्त नहीं हो सकते थे उन्हें यहीं देसी विधि से तैयार करना था। इस कार्य को डा. मथुरा सिंघ जी ने अपने जिम्मे लिया और उन्हें ने किसी गुप्त स्थान पर बम्ब निर्माण करने का कारखाना भी लगाया।

सरदार मथुरा सिंघ जी ने अमृतसर के खालसा कालेज के एक सीनियर नेता सरदार सुन्दर सिंघ जी को विश्वास में लिया और उन्हें गद्दर पार्टी का सदस्य बनाने में सफल हो गये। गद्दर करने का समय और दिन 21 फरवरी निश्चित था।

अत: आप सरहदी प्रांत गये ताकि पठान लोगों को इस योजना में सम्मिलित किया जा सके। इन दिनों एक भूल हुई पार्टी का सदस्य सरकारी गुप्तचार विभाग के एक कर्मचारी किरपाल सिंघ को बना लिया गया उसने पार्टी के सभी भेद सरकार को क्रमवार बता दिये जिस से भांडा फोड हो गया और बहुत से क्रांतिकारी ग्रिफतार कर लिये गये। परन्तु डाक्टर मथुरा सिंघ

जी किसी प्रकार बचकर अफगानिस्तान निकल गये। वहां पर वह अंग्रेज़ सरकार के दबाव में ग्रिफतार कर लिए गये परन्तु राजा महेन्द्र प्रताप की सहायता से वहां से छुटकर तुर्किस्तान पहुंचे। उन्होंने विदेशों में फिर से गद्दर पार्टी के बचे खुचे सदस्यों से मिलकर एक आर्ज़ी सरकार की घोषणा कर दी और रूस सरकार से भारत को स्वतन्त्र करवाने के लिए सहायता मांगी परन्तु सहायता तो क्या मिलनी थी वहां के स्थानीय राजदूत ने इन्हें पकड़वा दिया। इस प्रकार वह भारत लाये गये।

इस बार इस मुकदमें में 12 दोषी थे जिन पर लाहौर में एक संक्षित से मुकदमा चला क्योंकि सरदार मथुरा सिंघ जी ने सभी अपराधों को स्वीकार का लिया और कहा – मेरी मृत्यु के पश्चात मुझ जैसे और बहुत से क्रांतिकारी उत्पन होंगे जो देश को स्वतन्त्र करवा कर ही दम लेंगे इस प्रकार इन सभी क्रांतिकारियों को मृत्यु दंड के रूप में फांसी पर लटका दिया गया।

सरदार जंवत सिंघ जी

यदि किसी ने भारत को योजना बद्ध विधि से स्वतन्त्र करवाने का स्वप्न साकार करने का प्रयत्न किया तो वे लोग थे, विदेशों में गये हुए वे भारतीय जो उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अथवा धन अर्जित करने गये थे। वास्तव में उन लोगों को विदेशों में अभास हुआ कि हमारे सिर जो गुलामी की हीनता जुड़ी हुई है, इस से तो मृत्यु अच्छी है। भारतीयों में देश प्रेम की भावना जागृत करने तथा उन्हें संगठीत करने का कार्य सर्व प्रथम गद्दर समाचार पत्र ने ही किया था। इस लहर से जुड़े हुए लोगों में से समर्पित एक पुरुष थे सरदार जवंत सिंघ।

सरदार जवंत सिंघ नंगल कस्बा, जिला होशियारपुर पंजाब के दवाबा क्षेत्र के निवासी थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में आप जी अनेकों अन्य दवाबा क्षेत्र के निवासियों के साथ कैनेडा जा बसे। जब वहां अंग्रेज़ों ने भारतीयों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा वहां पहले से रह रहे भारतीयों को हीन भावना की दृष्टि से व्यवहार किया जाने लगा तो सहज ही भारतीयों में अंग्रेज़ों के प्रति ग्लानी की भावना उत्पन हो गई। स्वाभाविक था स्वाभिमानी भारतीयों में देश

को स्वतन्त्र करवाने के लालस का जन्म होना। सरदार जवंत सिंह के हृदय में गुलाम भारतीय होने का दर्द सदैव समाया रहता था वह प्रति क्षण कोई ऐसे व्यक्तियों की खोज में रहते जिस से देश को स्वतन्त्र करवाया जा सके। जैसे ही आप गद्दर पार्टी के समर्पक में आये। आपने अपना अवकाश का समय इस पार्टी की नीतियों के प्रचार – प्रसार पर लगा दिया और आप कैनेडा देश में गद्दर पार्टी के प्रमुख नेता के रूप में उबरे।

जब गद्दर पार्टी ने निर्णय लिया कि सभी गद्दर पार्टी के सदस्य स्वदेश लोटे और वहां पर सशस्त्र क्रांति लाने के प्रयास में कार्यरत हो जाये तो सरदार जवंत सिंघ जी भी स्वदेश लोटे परन्तु अंग्रेज़ों को गद्दर पार्टी की नीतिओं का पहले से ही पता लग गया था अत: अंग्रेज़ों ने भारत में लोटने वाले भारतीयों पर कड़ी नज़र रखनी शुरु कर दी और सभी की बहुत सख्ती से तलाशी ली जाती थी। इस बीच बहुत से गद्दरी बंदरगांहों पर ही पकड़ लिए गये जो आंख मिचोली खेलकर निकल गये उन्होंने पंजाब जा कर स्वयं को पुनरगठित किया और नये देश भक्तों को खोजने में लग गये। जवंद सिंह जी भी अंग्रेज़ों के शकंजे से किसी प्रकार बचकर पंजाब के नंगल क्षेत्र में पहुंच ही गये। वहां उन्होंने गांव – गांव जाकर अंग्रेज़ों के चुगल से भारत को मुक्त करवाने के लिए जनसाधारण को जागृत किया। इस कार्य में उन्हें एक महिला गुलाब कौर का बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। अब क्रांतिकारियों के पास शस्त्रों का अभाव था। शस्त्र खरीदने तथा पार्टी के अन्य खर्चो के लिए धन की आवश्यकता थी। जो कि कहीं से प्राप्त नहीं हो रहा था। इसलिए डाके मार कर इस कार्य को पूरा करने का निर्णय लिया गया। दूसरा सशस्त्र पुलिस के सिपाहीओं से शस्त्र छीनने पर भी विचार विमर्श होता रहा परन्तु ऐसा करना इतना सहज कार्य न था कई योजनाएं विफल हुई। किसी – किसी स्थान पर डाके मारते समय लूटने वालों से वायदा भी किया गया कि हमें सफलता मिलने पर यह धन राशी ब्याज सहित लौटा दी जाएगी।

जब 21 फरवरी 1915 ईस्वीं को क्रांति विफल हुई। तब 82 गद्दरीओं को लाहौर षड्यंत्र केस में फांसी द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया। परन्तु जवंत सिंह तथा अन्य 16 कार्यकरता लापता घोषित किये गये।

तब जवंत सिंह जी ने उन दुष्टों को ठिकाने लगाने का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया जिन के कारण यह विशाल योजना विफल हुई थी। सर्व प्रथम उन्होंने नंगल के ज़ैलदार नंदा को निशाना बनाया फिर अन्य टाउटों को । अन्त में वह लगभग दो वर्षो बाद 28 मार्च 1917 को कलवाल, ज़िला होशियारपुर में ग्रिफतार कर लिया गया और पांचवें साजिस केस में 26 मई 1917 को फांसी द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया। इस के साथ ही उनके घर तथा खेत इत्यादि भी जब्त कर के लीलाम कर दिये गये।

गुरुद्वारा रकाब गंज की दीवार को गिराना

सन् 1911 ईस्वी में अंग्रेज़ सरकार द्वारा भारत की राजधानी को कलकत्ते से बदल कर नई दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया। इस नगर के विकास कार्यो के लिए सन 1912 में गुरुद्वारा रकाबगंज के महंत को विश्वास में लिया और उस से गुरुद्वारा साहिब की भूमि मूल्य देकर खरीद ली और वहां पर वायसराय की कोठी बनाने के लिए गुरुद्वारा साहिब की छः नुकरों वाली अहातों के आकार की दीवार के कुछ भाग को गिरा दिया गया।

इस घटना के परिणाम स्वरूप सिक्खों में जागृति आई। उन्होंने विचार किया कि सिक्ख पंथ को विश्वास में लिये बिना महंत को क्या अधिकार था कि गुरुद्वारा साहिब की सम्पति सरकार को बेचे तथा सरकार को क्या अधिकार है कि वह गुरुद्वारा साहिब की दीवार अथवा इमारत को अपने स्वार्थ के लिए गिरा दें। दोनों प्रश्न महत्त्व पूर्ण थे अत: सरकार और सिक्ख पंथ के बीच तनाव बन गया। सिक्ख विचार ने लगे अब वह समय आ गया है महंतों से गुरुद्वारा साहिब के अधिकार लेकर एक स्वतन्त्र संस्था बनाई जाये जो वास्तव में पंथ का प्रतिनिधित्व करती हो और गुरुमति की ठीक ढंग से प्रसार व प्रचार करने का संकल्प करें।

संत रणधीर सिंघ जी

भाई साहिब भाई रणधीर सिंघ (1878–1961 ई.) आप जी ने आज़ादी अदोलन में सक्रिय भाग लिया इस लिए आप को उमर कैद मिली। आप नाम–वाणी के रसिया थे अतः आपको लोग संत कह कर पुकारते थे आपने जहां सिक्खी का प्रचार किया वहीं बहुत सी गुरमति विचारधारा से ओत–प्रोत पुस्तकं लिखी ।

सरकार ने प्रस्थिति को समझा और सिक्खों को प्रसन्न करने के लिए भूमि के बदले भूमि रूप में 750 एकड़ क्षेत्र देने के पेशकश की परन्तु बात बढ़ गई थी सिक्खों ने यह प्रस्ताव स्वीकार न किया और अंदोलन का मार्ग चुन लिया। इसी मुद्दे पर पंजाब में कई स्थानों पर प्रदर्शन हुए। तभी सन् 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया इस पर सिक्खों ने अंदोलन बीच में ही स्थगित कर दिया। वैसे तो देश भर में स्थापित सभी सिंघ सभाओं ने इस अंदोलन में बहुत रुची दिखवाई परन्तु सरदार हरिचन्द सिंघ लाइलपुरी जी ने आंदोलन को प्रारम्भ करने में बहुत कार्य किया। इस आंदोलन में नारंगवाल क्षेत्र के भाई रणधीर सिंघ जी ने भी मुख्य भूमिका निभाई। जिन्होंने गद्दर पार्टी के विदेशों से लोटे सदस्यों के साथ मिलकर अंग्रेज़ सरकार का तख्ता पल्टने का अभियान भी चलाया परन्तु यह अभियान गद्दारों ने विफल कर दिया जिस के परिणाम स्वरूप भाई रणधीर सिंघ जी को अजीवन कारावास का दण्ड मिला।

गुरुद्वारा रकाब गंज की समस्या से निपटने के लिए सरकार ने एक षड्यन्त्र रचा। अंग्रेज़ों ने अपने आज्ञाकारी चीफ खालसा दीवान के नेतृत्व में सरदार सुन्दर सिंघ मजीठियां को विशेष अधिकार देकर दिल्ली भेजा जिन्होंने दिल्ली के समस्त ऐतिहासिक गुरुद्वारों के प्रबन्ध करने के लिए एक विशेष कमेटी के गठन प्रारम्भ कर दिया। इस कमेटी का उन्होंने संविधान रचा और दिल्ली के ऐतिहासिक गुरुद्वारों को अपने नियन्त्रण में ले लिया। यह कार्य पंजाब के लैफटीनैंट गवर्नर की छतर छाया में उन के आदेश से हुआ। अंग्रेज़ तो गुरुद्वारों के प्रबन्धक व स्वामी बनना चाहते थे परन्तु इस बात का विपरीत परीणाम निकला । यह घटना स्थानीय सिक्ख जनता के पक्ष में चली गई। जो प्रतिक्रम अंग्रेज़ चाहते थे वह सब कुछ न हो सका। अंग्रेज़ों द्वारा अनजाने में गुरुद्वारा सुधार लहर की अधारशिला रखी गई।

इस नई चेतना से प्रेरणा पाकर धीरे – धीरे सिक्खों ने ऐतिहासिक गुरुद्वारों पर कमेटियों का गठन कर के नियन्त्रण प्रारम्भ कर दिया। उदाहरण के लिए जो गुरुद्वारे नई चेतना पाकर महंतों से कमेटियों के नियन्त्रण में आ गये। वे क्रमवार ये हैं – चिटागांव, बादल (जिला होशियारपुर), हाफज़ाबाद, गुरद्वारा अकाली फूला सिंघ (नुशहिरा क्षेत्र) इत्यादि उल्लेखनिय हैं। जिन गुरुद्वारों के प्रबन्ध से सिक्ख संगत संतुष्ट नहीं थी उनके महंतों अथवा प्रबन्धकों पर दीवानी मुक्कदमें किये गये। ऐसे अनेकों गुरुद्वारा थे जिस में गुरमति का प्रचार न होकर अन्य – मति का प्रचार हो रहा था क्योंकि सरकार उन की पीठ पर थी और मुक्कदमे एक तो बहुत लम्बे खिचते थे दूसरा उन का निर्णय अधिकाशं सिक्ख पंथ के हित में नहीं निकलता था खैर – – – – – – – –

जैसे ही प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ। सरकार पर दबाव डाला गया कि वह दीवार का पुनः निर्माण करवा कर दे। सितम्बर 1920 में सरदार सरदूल सिंघ कविशर द्वारा एक सौ सिक्खों का शहीदी जत्था ले जाकर दीवार को फिर से खड़ा कर देने के कार्यक्रम पर अनेकों सिक्खों ने अपने नाम सूची में लिखाएं यह कार्य पहली दिसम्बर 1920 को आरम्भ करना था परन्तु सरकार ने इस से पूर्व ही दीवार का पुनः निर्माण करवा दिया। क्योंकि वह सिक्खों को विश्वास में लेना चाहती थी क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध में सिक्खों ने अंग्रेज़ों का साथ दिया था और सिक्ख सैनिकों ने अपनी वीरता के जोहर दिखाये थे जिस से अंग्रेज़ सरकार बहुत प्रभावित थी।

उन दिनों अंग्रेज़ सरकार सिक्खों की छोटी –छोटी शिकायते दूर करके उन को बहलाना चाहती थी। तब अंग्रेज़ों ने शस्त्र धारण करने के कानून में संशोधन करके 9 इंच की कृपाण रखने की आज्ञा समस्त देशभर में प्रदान कर दी तक कि जेल में भी सिक्ख कैदी अपने धार्मिक चिन्ह धारण कर सकें हैं आज्ञा दे दी।

लेखक – जसबीर सिंघ

समाप्त

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੇਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੁਸਾਹਿਬਾਂਨ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ੂਰਰ ਦੇਖੋਂ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹੋ ਜੀ।

इस वैब साईट की विशेषता

इस में है एक विशाल सिक्रव संग्रहालय (Museum)

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन वृंत्तातों से सम्बन्धित घटना क्रमों के चित्रों से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन काल तक काल्पनिक तस्वीरों जो इतिहास के द्रसाती हैं तथा उनके नीचे हैं हिन्दी और पंजाबी में टिप्पड़ियां (फुटनोट) जो घटनाक्रम अथवा इतिहासिक प्रसंगों का वर्णन करती हैं।

नोटः – यह कार्य बच्चों की रुची को मद्देनज़र रख कर किया गया है ताकि वे सहज में अपना इतिहास जान सके। मुझे आशा है सिक्रव जगद् के किशौर अथवा युवक इस विधि से लभान्वित होंगे क्यों कि इस प्रणाली में आधी बात तस्वीरे कहती हैं तथा आधी बात निम्नलिखित फुटनोट कहते हैं। इस प्रकार पाठकों के मन में अपने इतिहास को जानने के प्रति रुची जागृत हो जाती है। अब आप इस के आगे सत्तारवीं + अठारहवीं + उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के शहीदों के चित्र फुटनोट सहित देखेंगे। इस के साथ ही सिक्रव महापुरुषों अथवा महान व्यक्ति के लोग को भी देखेंगे। और टिप्पड़ियों द्वारा जाने जाएगे। कृप्या आप सिक्रव मयुजियम पर अवश्य ही किलिक किजिए।

नोट :–

1. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बटवा सकता है।

Download Free